

लोक मर्यादा का संरक्षण बाबा लखी शाह बंजारा

तुलछा राम
सहायक आचार्य GF (इतिहास विभाग)
महाराजा गंगा सिंह विश्व विद्यालय
बीकानेर(राज.)
EMAIL- TULCHHA0011@GMAIL.COM
MOB. 8094460445

• शोध सार:

मध्यकालीन इतिहास में अनेक साम्राज्यो, व्यक्तियों का उत्थान-पतन दृष्टिगोचर होता हो इस अवधि के इतिहास को महत्वपूर्ण बनाने में कई देशी-विदेशी और खानाबदोश जातियों की भूमिका रही है। बंजारा समुदाय खानाबदोश जीवन शैली के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत व अपनी व्यापारिक पद्धति के कारण मध्यकालीन इतिहास में अपना अहम स्थान रखता है। प्रस्तुत शोध पत्र में बंजारा समाज के बाबा लखी शाह बंजारा द्वारा किया गया सामुदायिक कार्य को दर्शाया गया है। लखी शाह ने न केवल तालाब, बावड़ी, कुएँ, सराय, दुर्ग आदि का निर्माण करवाया बल्कि अपनी लोक मर्यादा धर्म का पालन करते हुए सिख गुरु तेग बहादुर के शरीर का सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार किया। बंजारा जाति अपने स्वभाव से ही निडर, चतुर और व्यापार कुशल जाति रही है। इनके काफिले को टाँडा कहा जाता था। व्यापार के साथ लखी शाह का संबन्ध राज सत्ता से भी रहा। सिख धर्म के गुरुओं को वो अपना आदर्श और गुरु मानते थे। अनेक पड़तावना के बाद भी लखी शाह ने अपना धर्म परिवर्तन नहीं किया। बल्कि अपना गुरु धर्म निभाते हुए अपने परिवार व टांडे का भी बलिदान दिया और ओरंगजेब के प्रकोप को सहा है।

बीज शब्द : टांडा, व्यापार, बंजारा, संस्कृति शहादत।

प्रस्तावना

मध्यकालीन इतिहास अनेक साम्राज्यों, व्यक्तियों, घटनाओं के उत्थान पतन के कारण अजर अमर रहा। इस अवधि में कई देशी-विदेशी जातियाँ आयी गयी। मध्यकालीन इतिहास निर्माण में व्यापारिक एवं वैदेशिक संबंधों के निर्माण में छोटी-बड़ी खानाबदोश जातियों की बड़ी भूमिका रही है। मुगल साम्राज्य में व्यापारिक और सामरिक संबंधों के निर्वाह में बंजारानामक जाति अविस्मरणीय योगदान रहा है। अपनी प्राकृतिक संरचना घुमक्कड़ जीवन शैली, निडरता आदि गुणों के कारण यह जाति राजसत्ता के साथ-साथ लोक सत्ता में भी लोकप्रिय रही है। बंजारा अपने टांडा प्रणाली, संस्कृति, जीवन शैली आदि के कारण अपराजेय रही है, इस कारण इसकी सामाजिक संरचना के कारण कई वीर बनजारों का नाम आज भी बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है अपनी सहयोग की भावना व वीरता के कारण यह जाति राजसिंहासनों के नजदीक रहे है। ऐसा ही एक नाम बाबा लखी शाह बंजारा का आता है।

बंजारा समुदाय

बंजारे पारंपरिक रूप से अपनी खानाबदोश जीवन शैली के लिए जाने जाते थे, तथा व्यापारी और माल के परिवहन कर्ता के रूप में काम करते थे। उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में नमक और अनाज जैसी आवश्यक वस्तुओं को वितरित

करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। “बंजारा लोगों द्वारा अपनी बस्तियों को टांडा / शिविर कहा जाता था। “टांडा” में रहना उनकी खास विशेषता थी, जो उन्होंने अपने खानाबदोश जीवन के दिनों से हासिल की थी। हालांकि आधुनिक समय में भी लोग टांडा में ही रहते हैं। बंजारा लोगों का पारंपरिक घर अन्य गैर-बंजारा घरों से बहुत अलग दिखता था, जो प्राकृतिक रूप से बने अपने मिलनसार स्वभाव के कारण आसानी से घुल-मिल जाते हैं। चूंकि वे मुख्य धारा के समाज में समाहित हो गए हैं, इसलिए सरकार उन्हें स्थायी घर मुहैया करा रही है। बंजारा लोगों की सामाजिक जीवन-शैली आज भी अनुभव की जाती है और दिखाई देती है। बंजारा बस्तियों की कुछ खासियतें यहां दी गई हैं”।¹

सांस्कृतिक पहचान और परंपराएँ:

बंजारा अपनी संस्कृति व परम्परा एक जीवंत संस्कृति है जो अपनी विशिष्ट बोली जो पूरे भारत में एक समान बोली जाती है। इस समाज की बोली को गोर, गोरमाटीया बंजारी बोली बोली जाती है लेकिन भारत के अन्य हिस्सों में इसे लमाणीया लबाड़ी भी कहा जाता है। “गोर माटी बोली मारवाडी बोली से मिलती जुलती है। गोरमाटी का अर्थ- अपने लोग मोती राज राठोड के अनुसार बंजारा लोग अपने लोगो को गोर बाहरी लोगों को कोर से संबोधित करते थे”।² बंजारा समाज की महिलाओं व पुरुषों को आभूषणों का बहुत शौक है। “बंजारा महिला आभूषण दो से पाँच किलों तक के सोने चांदी व हाथी दांत के आभूषण पहनती है। महिलाओं की पोशाक जिससे मोटे-मोटे प्रिंट बने हुए व लहंगा, गाउन फेतिमा (स्क्रर्ट) पेटिकोट, कांचली, (ब्लाउज) इन सब पर अलग-अलग प्रकार का अलंकृत किए हुए रखती है पोशाक पर कशीदाकारी वदर्पण लगा हुआ इन सबके साथ टेटू भी एक प्रकार की प्रथा है जो रंग बिरंगे टेटू बने होते हैं जो सौंदर्य व बीमारियों से बचने का उपाय बताया जाता है जो इस समाज को विशिष्ट पहचान दिलाता है”।³

बंजारा अपनी संस्कृति को आज भी अक्षुण्ण बनाए हुए है। बंजारा अपनी संस्कृति, या पहचान को बचाने के लिए अपने आपको मर मिटा देते हैं ऐसी एक घटना मलुकी व अकबर की है “मलुकी से अकबर शादी करना चाहता था पर बनजारों ने अपना मान-मर्यादा बचाने के लिए इसे स्वीकार नहीं किया इस कारण अकबर बनजारों पर भारी कर

लगाया और उनसे युद्ध किया तब वीर बनजारों द्वारा अपने शौर्य, पराक्रम, व बलिदान के कारण अकबर से दो युद्ध किये (1591 व 1592) जिन मे बंजारे विजय हुए और अकबर को निशुल्क चुंगी देकर व्यापार करने का आदेश दिया”¹⁴



बाबा लखी शाह बंजारा

बाबा लखी शाह बंजारा परिचय

बंजारा समाज मे बाबा लखी शाह बंजारा को लखी/ लाखा/ लक्खी और लख्खी बंजारा आदि नामो व अलग अलग उपाधियों राय/ शाह/ या बाबा से पुकारा जाता है। उन का जन्म 4 जुलाई 1580 को खैरपुर गांव जिला मुजफ्फरगढ़ (वर्तमान- पाक०) मे हुआ। भाट बहियों के तहत उनके पिता गोधू शाह व दादा ठाकुर शाह, व पुरुषोत्तम शाह के परपोते थे। उनके आठ बेटे सतरह पोते व चौबीस परपोते थे। इन का परिवार बहुत बड़ा था। परिवार बड़ा होना व सब एक साथ रहकर एक साथ रहकर व्यापार करना हो या परिवार के बारे मे कोई बड़ा फैसला लेना हो वो सब परिवार या टांडा का मुखिया ही लेता था। भोजन एक साथ पूरा परिवार खाता था, जो सुयुक्त परिवार का उत्कृष्ट उदहारण है।

लखी शाह का लालन पालन उन परिस्थितियों में हुआ जब देश में मुगलों का आधिपत्य था उन्होंने अपने पिता व दादा ठाकुर के साथ अकबर के साथ व्यापार वाणिज्य में हाथ बढ़ाया था अकबर का ठाकुर शाह मुख्य व्यापारी थे जो देश के विभिन्न कोने में खाद्यान व गोलें बारूद की आपूर्तिकर्ता था। शाह का उस समय से ही मुगलों के साथ नजदीकिया बढ़ी आगे चलकर शाह एक बड़ा व्यापारी बना जो इतिहास में मध्य एशियाई भागों मे व्यापार करता था। इतना विस्तृत क्षेत्र मे फैला व्यापार के कारण यह इतना प्रचलित कहावत “टांडा लादना” बनी। “मध्य एशिया के सबसे बड़े व्यापार का मुख्य केन्द्र दिल्ली था। इस जगह चार गांव मालचा, रायसीना, बरहाखम्बा, और नरेलाका मुख्या था। इस जगह से देश के विभिन्न क्षेत्रों आयात-निर्यात होता था”¹⁴ जो जगह बाबा लखी शाह के गाँव थे जो वर्तमान मे संसद भवन व राष्ट्रपति भवन इसी क्षेत्र मे आता है। मुख्य रूप से निर्यात कि जाने वाली वस्तुएं- नमक, शक्कर, मिश्री, कंद, गरी, दाख, मुनक्का, सौंठ, मिर्च, लोंग, सुपारी, केसर इत्यादि वस्तुओं का निर्यात किया जाता था। इसी के साथ ही मुगलों के द्वारा सैनिक अभियानों में रसद व हथियारों की आपूर्ति भी करते व युद्ध मे जीते गए खजाने लाया जाता था। बनजारों द्वारा सर्वाधिक व्यापार नमक किया जाता था उस समय नमक नहीं मिलता था नमक के बदले अन्य वस्तुएं ली जाती थी। वस्तु विनिमय (Barter system) से किया जाता था। इस प्रकार की व्यापार प्रणाली या प्राचीन काल से ही प्रचलित है जिसके साक्षी हमारे पूर्वज थे।

नजीर अकबरावादी का बंजारानामा

“तुक हिर्स-ओ-हवा को छोड़ मियां मत देस बिदेस फिर मारा

कज्जाक अजल का लुटे है दिन रात बजा कर नक्कारा

क्या बढ़िया भैंसा बेल शुतुर क्या गु में पल्ला सर-भारा

क्या गेहूं चावल मोठ मटर क्या आग धुआं और अंगारा

सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाड चलेगा बंजारा”¹¹⁵

“गर तो है लक्खी बंजारा और खेप भी तेरी भारी है

ऐ गाफ़िल तुझ से भी चढ़ता इक और बड़ा व्योपारी है

क्या शक्कर मिश्री और गरी क्या संभर मीठा खारी है

क्या दाख मुनक्का सोंठ मिर्च क्या केसर लौंग सुपारी है

सब ठाटपड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा”¹²¹⁶

लखी शाह’ का टांडा:-

लखी शाह के पास चार टांडों टांडो व एशिया का सबसे बड़ा व्यापारी होने के साथ-साथ चारो टांडा का नाइ कभी था। जो अपनी प्रजा के लिए पूर्णतः समर्पित था। शाह के चार टांडे थे जो चारों कोनों में व्यापार किया करता था। एक टांडे में एक लाख से अधिक प्राणी साथ में चलते थे (टांडा का अर्थ- समूह / काफिला) टांडा एक प्रकार का समूह या काफिला को कहते हैं जो अपने साथ पूरा का पूरा कारवा को साथ लेकर जाते हैं, कुछ इतिहासकार यह भी कहते हैं की गाँव के बाहर अपने तम्बू या टेंट लगा कर रहते हैं उसे टांडा कहते हैं। जिसमें पशु, जीव-जन्तु वे मनुष्य की गिनती एक साथ की जाती थी। इस टांडे में पचास हजार से एक लाख तक संख्या होती थी जो एक साथ चलते थे। “एक टांडे में एक साथ दससे पंद्रह टन व्यापारीक सामग्री एक एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाई जाती थी। एक टांडा एक दिन में दस से पंद्रह km तक यात्रा करता टांडा में पुरा परिवार (महिला, बच्चे व बूढ़े माता-पिता व राहगीर) एक साथ साथ चलते थे इसमें सैनिक भी होते थे जो टांडा में लूट-पाट न हो इसलिए युद्ध के लिए तैयार रहते थे। हथियारों का निर्माण भी टांडा में कुछ परिवार द्वारा किया जाता था”¹⁷

बनजारों द्वारा व्यापार में काम आने वाले पशु बैल, गाय, घोड़े, गधे, हाथी, व कुत्ते भी साथ में काम में लिया जाते थे। उस समय सबसे अधिक बैलों पर व्यापार किया जाता था उसके पश्चात गधों पर जो पथरिले व उबड़ खाबड़ इलाकों में सामान का आयात-निर्मात आसानी से किया जाता था। गधे को सबसे मजबूत जानवर माना जाता था क्योंकि हर मौसम में ढल जाता था छोड़ा एक बहु उपयोगी जानवर था जो मूलतः सैनिक गतिविधियों व टांडे से दूसरे टांडे तक सूचना पहुंचने के काम में लिया जाता था। हाथी केवल ‘शाह’ द्वारा सवारी के काम लिया जाता था।

लखी शाह बंजारा सामाजिक सरोकार

लखी बंजारा ने केवल व्यापार तक ही नहीं सिमित थे उन्होंने अपने सामाजिक कार्य भी करवाए जो उस समय के लिए जरूरी था। जिस समय देश में धार्मिक कटरता का माहौल था। उस समय शाह ने उन दुर्गम स्थानों पर सामाजिक सरोकार का काम किया जैसे तालाब, बावड़ी, कुए या सरायों का निर्माण करवाया था। कुए बावड़ी निर्माण जब किया जाता तो उस जगह के लोगो को रोजगार भी मिलता और दैनिक रोजमर्रा के सामानों की पूर्ति होती थी। इस कारण लखी बंजारा को लोगो द्वारा लोक कहावतो व गीतों में गाया जाता है।

सराय निर्माण:-

बंजारों का टांडा एक दिन में अधिकतम 10 से 15 किलोमीटर यात्रा कर सकते थे इसी में परिवार व पशुओं के लिए पानी व रात्री विश्राम के लिए सरायों की आवश्यकता होती थी इसीलिए शाह ने जिस मार्ग से भी व्यापार किया उस मार्ग पर सराय, कुए, तालाब व बावड़ी का निर्माण करवाया गया ऐसी बहुत सी बावडिया, व तालाब हैं जो हमें सड़क के किनारे बने हुए मिलते हैं लेकिन बनाने वालों का नाम अंकित नहीं है जो मूलतः 16वीं से 17वीं शताब्दी के मध्य बनी है। इन सब का निर्माण व्यापारिक मार्गों पर हुआ जो यह दर्शाता है की इस स्थान से पहले व्यापारिक कारवा गुजरता

था कुछ बावड़ीयों का निर्माण इस प्रकार होता था जैसे पोंकरण से भी या नाके बीच थोट के पास रेगिस्तान में 6 बावडिया बनी है जो चार बावडिया के किनारे छोटी होदी (खैली) बनी है और दो बावड़ी के पास कुछ नहीं बनाए सामना जाता है की यह बावड़ी मनुष्य के पानी पिये के उपयोगी होंगी लेकिन इन के बारे में कोई लिखित साक्ष्य नहीं मिलता भौगोलिक परम्परा में यह प्रचलित है की इनका निर्माण व्यापारियों द्वारा करवाया गया होगा।

सागर झील – मध्यप्रदेश

“इस झील का निर्माण लाखा बंजारा द्वारा करवाया गया क्योंकि यह क्षेत्र व्यापारिक मार्ग पर अवस्थित था। इस झील के किनारे लाखा बंजारा की 21 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापित की गई है। इसका निर्माण 1660 के लगभग माना जाता है। यह सागर शहर के बीचो बीच होने के कारण सागर की शोभा बढ़ाता है”¹⁸

पिजौरासेना लारोडबल सोला हरियाणा में लखी शाह बंजारा के नाम से पाँच एकड़ का तालाब बना हुआ है

लखी शाह बंजारा और राजनैतिक संबंध

शाह द्वारा राजसत्ता के साथ अच्छे संबंध थे लेकिन कुछ ऐसे कार्य भी करवाए जो उनके खिलाफ थे उस समय मुगलों द्वारा कोई नया किला, महल, या बड़ी संरचना के निर्माण पर रोक थी उसके बावजूद शाह ने कुछ ऐसे किलों का निर्माण करवाया।

लोहागढ़ किला

“इस किले का निर्माण शाह द्वारा गुप्त रूप से हिमाचल प्रदेश में करवाया गया जो 1000 एकड़ में फैला था। जो बाबा बन्दा सिंह बहादुर द्वारा स्थापित करवाया गया इसका निर्माण कार्य 1630 से 1675 में बनवाया गया”¹⁹ इस समय मुगलों द्वारा किसी बड़ी संरचना का निर्माण नहीं करने दिया जा रहा था। तब बाबा लखीशाह द्वारा गुप्त रूप से बनवाया गया इस किले आस पास सिख आबादी के अस्सी थे। लखी शाह ने यहाँ कई कुटीर उद्योग खोले जो वन संतूर गांव में हथियारों उद्योग, शिख तांडव बिहार की खाने जो लौह अयस्क व तांबा के लिए उपयोगी थी। सध्या गांव में खिलौने उद्योग व कई सारे ईंट, चूने के भट्टे लगाये थे जो इस क्षेत्र के लोगों को रोजगार प्रदान करते थे। इस लोहागढ़ व आस पास की बस्तियों को 1716 में मुगलों द्वारा नष्ट किया गया। 1852 के राजस्व रिकार्ड में किले होने का प्रमाण मिलता है।

शाह द्वारा राजसत्ता के नजदीकिया इतनी थी की मुगलों के सैनिक अभियान में बंजारा टांडा भी शामिल होता था जो रसद, हथियारों व सैनिकों की सेवा भी देते थे इस कारण राजसत्ता के नजदीक बने हुए थे इस कारण बंजारों को मुगलों द्वारा मकरन हीं लिया जाता था।

दिल्ली का लाल किले का निर्माण शाहजहां द्वारा 1638 में आरम्भ हुआ जो लगभग 1648 में पूर्ण हुआ। इस किले निर्माण में मुख्य ठेकेदार रूप में लखी शाह बंजारा था। इस किले में आवश्यक सामग्री आपूर्ति व मजदूरों को रोजगार प्रदान करने का कार्य किया गया जो 2008 में इसे यूनेस्को की विश्व धरोहर में शामिल किया गया।

शाह द्वारा किया गया जन सहयोग

शाह द्वारा व्यापार, वाणिज्य, व निर्माण कार्य के आलावा दुर्गम पहाड़िया, रेगिस्तान, दूर दराज के गांव में जाकर खाद्य सामग्री की आपूर्ति करते थे इस कारण शाह को हर कोने में जानने लगे दुर्गम स्थानों में रह रहे लोगों की आर्थिक मदद, उनके लिए पानी की व्यवस्था के लिए कुएँ, तालाब, बावड़ी, प्याऊ आदि की व्यवस्था करते थे

शाह और गुरु तेग बहादुर सिंह के साथ संबंध

बाबा लखी शाह बंजारा गुरु तेग बहादुर सिंह को अपना गुरु मानते थे। इनके साथ अच्छे संबंध थे। जब “औरंगजेब के द्वारा गुरु तेग बहादुर व तीन शिष्यों को कैद करके लिया व इनको इस्लाम कबूल करने को कहा लेकिन इन सभी ने इस्लाम कबूल नहीं किया इस्लाम स्वीकार नहीं करने के कारण गुरु तेग बहादुर के सामने अपने तीनों शिष्यों को सतीदास जी को आरी से काट कर दो टुकड़े किए गए व मती दास जी को रुई में लपेट कर जलाया गया और दयाला जी को उबलते हुई देग के पानी में डालकर हत्या की गई वो गुरु तेग बहादुर के सामने तीनों शिष्यों की हत्या करने के पश्चात भी गुरु ने अपने धर्म की रक्षार्थ हेतु इस्लाम कबुल नहीं किया और एक सबसे बड़ी शहादत देने को तैयार हुए”¹⁰ इन तीनों की शहादत के पश्चात गुरु को और भी बड़े प्रलोभन दिए गए परन्तु इन्होंने एक भी स्वीकार नहीं किया इसके पश्चात औरंगजेब के

(बाबा लखी शाह बंजारा को गुरु तेग बहादुर, भाई मति दास, भाई, सती दास जी और दयाला दास की फांसी की



बसाहतुल्ला (बशारत उल्लाह) की पेंटिंग का विवरण नाभा के महाराजा के दरबारी चित्रकार द्वारा बनाई गई पेंटिंग, लगभग 19वीं सदी)

आदेश के तहत जलाद ने शीश को घड़ से अलग कर दिया। औरंगजेब ने आदेश दिया गया की गुरु का अन्तिम संस्कार नहीं किया जाएगा व इनके शरीर को भी हाथ नहीं लगाया जाएगा तब सभी इस आदेश को लेकर भय भीत थे

परन्तु इस घटना की सूचना मिली कि उनके गुरु का सिर धड़ से अलग कर दिया गया है तभी बजारा अपने भरे टांडा को चांदनी चौक की ओर रवाना करते हैं और रुई से भरी बैल गाड़ीया दौड़ाई जाती है भाई जैता को गुरु का शिस दिया जाता है। गुरु की धड़को अपनी बैलगाड़ी में डालकर अपने घर रकाब गंज में जाकर ले जाकर अपने घर सहित गुरु की धड़, का अंतिम संस्कार कर दिया। इस घटना की सूचना औरगजेब को मिलती है तब बाबा लखी शाह बजारा को लाल किले में बुलाया जाता है और इस घटना के बारे में बताया जाता तबबाबा लखी शाह द्वारा कहा जाता है कि बादशाह तेरा और मेरा संबंध सिर्फ व्यापार का संबंध है। वो मेरा व मेरे गुरु का संबंध तुमने जो किया वो तेरा कर्म था। गुरु का अंतिम संस्कार करना मेरा कर्म व मेरा धर्म था वो मैंने किया। इस बात पर बाद शाह क्रोधित हो जाता है और टांडे को शाही सेना में मिला लेता है शाह किसी तरह से लालकिले से बाहर निकलते हैं वहाँ से अपने परिवार व बाकी बचे टांडे को लेकर दिल्ली से बाहर चले जाते हैं। 99 वर्ष की आयु में 7 जून 1680 को मालवा में मृत्यु हो जाती है।

संदर्भ सूची

1. टांडा एक काफिले को कह सकते हैं इस में इंसान से पशु तक की संख्या गिनी जाती थी इसी कारण यहां लाखों की संख्या में चलते थे।
2. डी.बी.नाइक: बजारा लम्बाडिज की कला और साहित्य; अभिनव प्रकाशन, (नई दिल्ली, 2000)।
3. डी.बी.नाइक: बजारा लम्बाडिज की कला और साहित्य; अभिनव प्रकाशन, (नई दिल्ली, 2000)।
4. मलुकी अकबर का अधूरा सपना महेश चंद बजारा, जयराम पंवार, खुशीराम कापड़ी, डॉ श्री राम पंवार 2020 प्र.स 26, 39, 44, 45, 49, 56, 64
5. नजीर अकबरावादी द्वारा उर्दू में लिखित कविता “बंजारानामा”
6. नजीर अकबरावादी द्वारा उर्दू में लिखित कविता “बंजारानामा”
7. तपन राय चौधरी और इरफान हबीब, द कैम्ब्रिज इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया सी.1200-1750, खंड 1. ओरिएंट ब्लैक स्वान, दिल्ली, पुनर्मुद्रण 2010, पृष्ठ 354.
8. सागर का इतिहास” sagar.nic.in मूल से 23 मई 2019 को संग्रहीत 17 मई 2019 को लिया गया।
9. यमुना नगर, n व कुमार शर्मा इन (20 अक्टूबर 2017)। “राख से उठेगा लालोहगढ़” <https://www.tribuneindia.com/news/archive/fort-lohgarh-to-rise-from-ashes-482456> (<https://www.tribuneindia.com/news/archive/fort-lohgarh-to-rise-from-ashes-482456>)
10. चंद्रा, सतीश (2005). मध्यकालीन भारत: सल्तनत से मुगलों तक भाग –II . हर-आनंद प्रकाशन. पृ. 296. आई.एस.बी.एन 978-81-241-1066-9.